राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019-20
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर 1

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

सभ्य आचरण और व्यवहार ही शिष्टाचार कहलाता है। जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्त्व है। बातचीत करते समय सभी को एक-दूसरे से शिष्टाचार से बात करनी चाहिए। छोटों को बड़ों से और बड़ों को छोटों से बात करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। शिष्टाचार का पालन करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं होती। शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे खेद प्रकट करते हैं और सहज ही अपनी गलती स्वीकार करते हैं। विद्यार्थी-जीवन में तो शिष्टाचार का और भी अधिक महत्त्व होता है क्योंकि यही शिक्षा जीवन का आधार बनती है। स्कूल की प्रार्थना सभा में पंक्ति में आना-जाना, कक्षा में शोर न करना, अध्यापकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना, सच बोलना, सहपाठियों से मिलजुल कर रहना, स्कूल को साफ-सुथरा रखना, स्कूल की संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना व छुट्टी के समय धक्कामुक्की न करना शिष्ट बच्चों की निशानी है। ऐसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक- **शिष्टाचार का पालन** है।

2. शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे क्या करते हैं? 1

उत्तर :
शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे खेद प्रकट करते हैं और अपनी गलती मान लेते हैं।

3. कैसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं? 1

उत्तर :
शिष्टाचार का पालन करने वाले बच्चों को सभी पसंद करते हैं।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरे प्रलय की घोर घटाएँ
पाँवों के नीचे अँगारे
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएँ
निज हाथों से हँसते-हँसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा
उजियारे में अंधकार में।
कल कछार में, बीच धार में
घोर घृणा में, पूत प्यार में
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में
जीवन के शत् शत् आकर्षक
अरमानों को ढलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा

4. कदम मिलाकर चलने हेतु क्या आवश्यक है? 1

उत्तर :
कदम मिलाकर चलने हेतु आवश्यक है कि मार्ग में आगे बढ़ने पर कितनी भी बाधाएँ क्यों न आए हमें कभी विचलित नहीं होना चाहिए, बल्कि मिलकर रास्ते तय करने चाहिए।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

5. अरमानों को किसमें ढलना पड़ता है? 1

उत्तर :
अरमानों अर्थात् इच्छाओं को अँधकार हो, उजाला हो, किनारा हो या समुद्र के बीच की धारा हो, घृणा हो या प्रेम हो, जीत हो या हार हो सभी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

6. कदम मिलाकर चलने से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर :
कदम मिलाकर चलने से तात्पर्य है मिलकर मंजिलों की ओर बढ़ना।

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. राष्ट्रीय एकता
   (क) प्रस्तावना
   (ख) राष्ट्रीय एकता का महत्त्व
   (ग) एकता के मार्ग में बाधाएँ
   (घ) राष्ट्रीय एकता की रक्षा
   (ड़) राष्ट्रीय एकता के उपाय
2. विजयदशमी या दशहरा
   (क) प्रस्तावना
   (ख) ऐतिहासिक आधार
   (ग) उत्सव मनाने की विधि
   (घ) कुल्लू का दशहरा
   (ड़) शिक्षा
   (च) उपसंहार
3. समाचार–पत्रों का महत्त्व
   (क) प्रस्तावना
   (ख) समाचार–पत्रों का वर्तमान स्वरूप
   (ग) समाचार पत्रों के दायित्व
   (घ) उपसंहार
4. स्वच्छ भारत अभियान
   (क) प्रस्तावना
   (ख) स्वच्छता अभियान का उद्देश्य
   (ग) स्वच्छता अभियान का व्यापक क्षेत्र
   (घ) स्वच्छता अभियान से लाभ
   (ड़) उपसंहार

उत्तर :

1. राष्ट्रीय एकता

है एक ही देश, एक ही है लक्ष्य हमारा; है एक ध्वज, एक ही संगीत हमारा।
हम एक–सी ही राह, हैं सभी मिलकर बनाते; हम एक हैं सब एकता का नाद गुँजाते।।

1. **प्रस्तावना –** एक परिवार से लेकर पूरे राष्ट्र और विश्व तक के जीवन में एकता का बहुत महत्त्व है। भारतवर्ष कई राज्यों की इकाइयों का संघ है। इसमें अनेक भाषा बोलने वाले, अनेक धर्मों को मानने वाले और अनेक विचारधाराओं के लोग रहते हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय एकता का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, किन्तु भारतवर्ष की परम्पराएँ और संस्कृति एक है। हमारा संविधान एक है। पूर्ण राष्ट्र माला के विभिन्न फूलों की भाँति एकता के सूत्र में बँधा हुआ है। भारत कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक है।
2. **राष्ट्रीय एकता का महत्त्व –** एकता का मानव–जीवन में बहुत महत्त्व है। एकता के अभाव में मानव–जीवन बिखर जाता है। उसकी उन्नति के सारे मार्ग बन्द हो जाते हैं। यही स्थिति एक राष्ट्र की भी होती है। जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र एक है तब तक कोई भी विदेशी शक्ति देश की ओर आँख उठाकर नहीं देख सकती, परंतु जब देश में कलह या एकता का अभाव दृष्टिगोचर होने लगे, तो देश पतन के गर्त में चला जाता है। पृथ्वीराज तथा जयचन्द का उदाहरण द्रष्टव्य है। उनकी आपसी फूट के कारण ही मुहम्मद गौरी को भारत पर आक्रमण करने का साहस हुआ। रावण और विभीषण की आपसी फूट के कारण ही सोने की लंका जलकर राख हो गई। राजपूतों की परस्पर शत्रुता के कारण ही भारत में मुगलों के पाँव जम गए।
3. **एकता के मार्ग में बाधाएँ –** भारत की राष्ट्रीय एकता में आज अनेक बाधाएँ उत्पन्न हो गई हैं; लेकिन सबसे बड़ी बाधा तो भाषा की भिन्नता है। भाषा की विभिन्नता के कारण एक ही देश के लोग एक–दूसरे के लिए अजनबी बन जाते हैं। भाषा को लेकर आए दिन दंगे होते हैं। राष्ट्रीय एकता के मार्ग में दूसरी बड़ी बाधा है–साम्प्रदायिकता। हर दिन विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों में झगड़े होते रहते हैं। तीसरी बाधा है–प्रांतीयता और चौथी बाधा है–जातीयता की। इन सब कारणों ने भारत की राष्ट्रीय एकता को कमजोर बना दिया है।
4. **राष्ट्रीय एकता की रक्षा –** देश के हर नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्रीय एकता को स्थिर रखने के लिए तन–मन और धन से कार्य करें। उसे उन भावनाओं और विचारों से दूर रहना चाहिए जो राष्ट्रीय एकता को हानि पहुँचाते हैं। उसे किसी लालच में आकर अपने देश की एकता को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए। यदि राष्ट्र में रहने वाले हम सभी नागरिक एकता के सूत्र में बँधकर रहेंगे तभी सुरक्षित रह सकेंगे।
5. **राष्ट्रीय एकता के उपाय –** इन बाधाओं को दूर करके राष्ट्रीय एकता को पहले की अपेक्षा मजबूत बनाया जा सकता है। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् उन सब बाधाओं को दूर करने के प्रयास किए गए हैं, जो राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधा पहुँचा रही हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता और जातीयता में वृद्धि हुई है। अतः हमें फिर से उन समस्याओं का समाधान करना होगा, जो हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधक सिद्ध हो रही हैं।

2. विजयदशमी या दशहरा

1. **प्रस्तावना–** हमारा भारतवर्ष त्योहारों का देश है। यहाँ प्रत्येक बात में धर्म किसी–न–किसी रूप में समाहित है। वैसे तो भारत में सभी धर्मों के पर्वों की संख्या सैकड़ों में है, परन्तु इनमें रक्षा बन्धन, दशहरा, ईद, बैसाखी, दीपावली तथा होली–बहुत बड़े तथा मुख्य पर्व हैं। दशहरा भारत के मुख्य पर्वों में से एक है। इस दिन भगवान् राम ने रावण पर विजय पाई थी। यह अच्छाई की बुराई पर विजय थी। यह त्योहार समस्त भारत में आश्विन् शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन बड़े उत्साह से मनाया जाता है।
2. **ऐतिहासिक आधार–** भगवान श्रीराम की जीवन–कथा को सभी

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

भारतीय भली–भाँति जानते हैं। अवध के राजा दशरथ की पत्नी कैकयी की हठ पर राम, लक्ष्मण और सीता को वन में जाना पड़ा। वहाँ रावण ने धोखे से सीता को उठा लिया। भगवान् राम ने हनुमान और सुग्रीव की वानर सेना को साथ लेकर रावण की लंका पर आक्रमण किया और विजय पाई, इसलिए यह त्योहार विजयदशमी के नाम से प्रख्यात है।

3. **उत्सव मनाने की विधि–** विजयदशमी के त्योहार को भारतीय बड़े उल्लास से मनाते हैं। कुछ दिन पूर्व से ही नगरों व गाँवों में रामलीला आरम्भ हो जाती है तथा नगर के प्रमुख बाजारों में रामचन्द्र जी के जीवन को चित्रित करने वाली सुन्दर झाँकियाँ निकाली जाती हैं। विजयदशमी को प्रातः काल से ही बाजारों को विशेष रूप से सजाया जाता है। उस दिन दूर–दूर के गाँवों से भी लोग नगरों में दशहरा देखने आते हैं। दुकानें सजाई जाती हैं। घरों में स्वादिष्ट भोजन बनाए जाते हैं। इस दिन रावण, कुम्भकरण, मेघनाथ के कागजों और बाँसों द्वारा बने हुए बड़े–बड़े पुतलों को जलाया जात है। इसी दृश्य को देखने के लिए वहाँ लाखों की संख्या में लोग जमा होते हैं। पुतलों में पटाखे भरे होते हैं। आग लगते ही वे बजने लगते हैं।
4. **कुल्लू का दशहरा –** कुल्लू का दशहरा विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहाँ एक सप्ताह पूर्व से ही दशहरे की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। नर और नारियाँ तुरहियाँ, बिगुल, ढोल, नगाड़े, बाँसुरी और घन्टियों के तुमुल नाद के मध्य नाच करते हुए कन्धों पर देवगण को उठाकर नगर की परिक्रमा करते हुए कुल्लू नगर के देवता रघुनाथ जी की वन्दना से दशहरे का पर्व आरम्भ करते हैं और अन्तिम दिन दोपहर बाद समस्त देवगण रघुनाथ जी के चारों ओर जोशपूर्ण परिक्रमा करते हैं। तत्पश्चात् युद्ध में बाजों के साथ लंका पर चढ़ाई की जाती है और व्यास नदी के किनारे काँटों के ढेर की लंका जलाकर नष्ट कर दी जाती है।
5. **शिक्षा –** हर त्योहार से कोई–न–कोई शिक्षा अवश्य मिलती है। दशहरे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि चाहे कोई कितना विद्वान् क्यों न हो, अगर उसमें अंहकार आ गया तो उसके सभी गुण व्यर्थ हैं। रावण जैसे विद्वान् लोग भी मर्यादा रहित बन जाते हैं। उनका अन्त भी बुरा ही होता है। अतः स्पष्ट है कि हमें कभी घमण्डी नहीं बनना चाहिए और सच्चाई के मार्ग पर चलते हुए कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए।
6. **उपसंहार –** दशहरा पर्व हमें बुराई को त्यागकर पुण्य–कार्य करने की प्रेरणा देता है। कवि का कथन है–
   पाप तिमिर सब मिट जाता है,
   सत्य का होता जब भी प्रकाश।
   सुसंदेश दशहरा पर्व का
   अन्यायी का होता है नाश।।

3. समाचार पत्रों का महत्त्व

1. **प्रस्तावना –** आज समाचार–पत्र मानव की दिनचर्या के अभिन्न अंग बन गये हैं। प्रजातन्त्र में समाचार–पत्र जनता की आवाज होते हैं। सत्तारूढ़ दल को सचेत करना, उसकी गलत नीतियों को प्रकाशित करना, जनता को जागरूक करना आदि उनके विभिन्न कार्य हैं। समाचार–पत्र समाज व देश की तस्वीर सामने रखते हैं और दैनिक घटित घटनाओं को प्रकाशित कर समाचारों का सही प्रसारण करते हैं। वर्तमान में मुद्रित संचार माध्यम के रूप में समाचार–पत्रों का विशेष महत्त्व माना जाता है।
2. **समाचार–पत्रों का वर्तमान स्वरूप –** वर्तमान में समाचार–पत्रों के अनेक स्वरूप हैं। ये दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक तथा त्रैमासिक रूप में छपते हैं। इनमें दैनिक समाचार–पत्रों का प्रसारण अत्यधिक मात्रा में होता है तथा आज सारे भारत में हिन्दी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में सैकड़ों दैनिक समाचार–पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें मुख्य समाचारों के साथ ही सरकारी तथा गैर–सरकारी नौकरियों की सूचनाएँ, विज्ञापन, क्रय–विक्रय, निविदा, विज्ञप्ति तथा विविध प्रकार की योजनाओं से सम्बन्धित समाचार प्रकाशित होते हैं। कुछ पत्रिकाएँ साप्ताहिक–पाक्षिक रूप में प्रकाशित होती है; इनमें धार्मिक, साहित्यिक, नारियों से सम्बन्धित स्वरोजगार तथा गृह–उद्योग सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित की जाती है। इस तरह के समाचार–पत्रों से सामाजिक चेतना को काफी लाभ मिलता है।
3. **समाचार पत्रों के दायित्व –** समाचार–पत्रों को लोकतन्त्र का सजग प्रहरी, जन–जागृति का मुख्य साधन तथा ज्ञान–बुद्धि व शिक्षा–प्रसार का सशक्त माध्यम माना जाता है। समाचार–पत्रों का दायित्व है कि वे शासन की नीतियों, उपलब्धियों एवं कमियों को निर्भीकता से जनता के सामने रखें। विपक्षी दलों की आवाज को खुलकर सरकार तथा जनता के सामने रखें। वर्तमान में हमारे देश में समाचार–पत्र अपने दायित्वों का निर्वाह उचित ढंग से कर रहे हैं। वे भ्रष्टाचार, बेईमानी, कालाबाजारी आदि के साथ भ्रष्ट नेताओं व अधिकारियों के कारनामों से जनता को परिचित करा रहे हैं। वे लोक–कल्याण में भी सहायक हो रहे हैं। रोजगार सम्बन्धी सूचनाएँ, राष्ट्रीय पर्वों एवं विभिन्न त्योहारों–उत्सवों की सूचनाएँ देकर जन–जागरण का कार्य कर रहे हैं। सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से समाचार–पत्र लोकतन्त्र के स्तम्भ बनकर अपना दायित्व निर्वाह कर रहे हैं।
4. **उपसंहार –** वर्तमान युग वैचारिक स्वतन्त्रता का युग है। हमारे देश में स्वतन्त्रता–संग्राम में समाचार–पत्र पत्रिकाओं का अद्वितीय योगदान रहा है। समाचारों के प्रकाशन में समाचार पत्रों का दृष्टिकोण निष्पक्ष एवं जनहितकारी होना चाहिए। सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना की दृष्टि से आज के युग में समाचार–पत्रों का अत्यधिक महत्त्व हैं।

4. स्वच्छ भारत अभियान

1. **प्रस्तावना –** विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि में भारत में स्वच्छता की कमी है, अनेक क्षेत्रों में गन्दगी दिखाई देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी 'क्लीन इण्डिया' का सपना देखते थे। उन्हीं के सपने को सन्देश रूप में लेकर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान का औपचारिक आरंभ 2 अक्टूबर, 2014 को गाँधी जयन्ती के दिन किया। इस अभियान से सफाई एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को गन्दगी से मुक्त करने का संदेश दिया गया है।
2. **स्वच्छता अभियान का उद्देश्य –** भारत देश में शहरों के आसपास की कच्ची बस्तियों में, गाँवों एवं ढाणियों में शौचालय की व्यवस्था नहीं हैं। विद्यालयों में भी जल एवं शौचालयों की कमी है। इससे खुले में शौच करने से गन्दगी फैलती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी प्रदूषित होता है। गन्दगी के कारण स्वास्थ्य खराब रहता है और अनेक बीमारियों पर नागरिकों को खर्चा करना पड़ता है। वर्तमान में देश में सवा ग्यारह करोड़ शौचालयों की जरूरत है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

अतः स्वच्छता अभियान का प्रथम उद्‌देश्य शौचालयों का निर्माण करना तथा स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना है।

3. **स्वच्छता अभियान का व्यापक क्षेत्र –** केन्द्रीय सरकार ने इस स्वच्छता अभियान को आर्थिक स्थिति से जोड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में गन्दगी के कारण प्रत्येक नागरिक को बीमारियों पर सालाना बारह–तेरह हजार रूपये व्यय करने पड़ते हैं। यदि स्वच्छता रहेगी तो बीमारियाँ नहीं होंगी और गरीब लोगों को अनावश्यक व्यय नहीं झेलना पड़ेगा। इस दृष्टि से सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय–निर्माण के लिए पंचायत स्तर पर अनुदान देना प्रारंभ कर दिया है। खुले में कूड़ा–कचरा डालने और पॉलिथीन कैरी बैग पर रोक लगाने, मल–जल की निकासी करने, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करने और विद्यालयों में शौचालय बनाने पर करोड़ों रूपए खर्च किये जा रहे हैं। साथ ही गंगा–यमुना नदियों की स्वच्छता का अभियान चलाया जा रहा है।
4. **स्वच्छता अभियान से लाभ –** इस अभियान से सबसे बड़ा लाभ स्वास्थ्य के क्षेत्र में रहेगा। लोगों को बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, दवाइयों पर व्यर्थ व्यय नहीं करना पड़ेगा। संपूर्ण भारत स्वच्छ बन जायेगा, तो देशों में भारत की स्वच्छ छवि उभरेगी। प्रदूषण का स्तर एकदम घट जायेगा और जल–मल के उचित निस्तारण से पेयजल भी शुद्ध बना रहेगा। साथ ही कृषि–उपजों में भी स्वच्छता बनी रहेगी।
5. **उपसंहार –** स्वच्छ भारत अभियान अभी आरम्भिक चरण में है। इसे गाँधीजी की 150वीं जयन्ती तक चलाकर देश को स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करना है। सरकार के इस अभियान में जनता का सक्रिय सहयोग अत्यंत आवश्यक है। प्रतिबद्धता रहेगी तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर का छात्र अमित मानते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को 15 दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना–पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

अजमेर।

विषय : 15 दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि मेरी माताजी का किडनी का ऑपरेशन होना है। इसके लिए डॉक्टरों ने 10 अक्टूबर की तिथि निश्चित की है। मुझे ऑपरेशन के पूर्व एवं पश्चात् उनकी सेवा के लिए अस्पताल में रूकना पड़ेगा। पिताजी अभी अपने कार्यालय के जरूरी काम से विदेश गए हुए हैं। उनकी अनुपस्थिति में मैं ही माँ के पास सेवा हेतु रहूँगा।

आपसे अनुरोध है कि आप मुझे 8 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक का अवकाश प्रदान कर कृपा करें।

मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अमित

दिनांक : 7 अक्टूबर, 2018 कक्षा–X ब

अथवा

8. स्वयं को जयपुर निवासी अविनाश मानते हुए जयपुर के नगर निगम के कार्यकारी अधिकारी को सड़कों पर बढ़ रहे अतिक्रमण को नियंत्रित करने हेतु पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,

श्रीमान् कार्यकारी अधिकारी महोदय,

नगर निगम, जयपुर।

विषय : सड़कों पर बढ़ रहे अतिक्रमण के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि पिछले कुछ दिनों से नगर की सड़कों पर अतिक्रमण बढ़ रहा है। दुकानदार अपना–अपना सामान फुटपाथ पर फैला देते हैं। कुछ लोगों ने तो वहाँ अनाधिकृत रूप से पक्का निर्माण भी करवा लिया है। उनकी देखा–देखी कुछ ठेली वाले और खोमचे वाले भी सड़क पर खड़े हो जाते हैं, जिससे आवागमन में बाधा उत्पन्न होती है और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहाँ प्रायः जाम की स्थिति बनी ही रहती है।

अतः निवेदन है कि शहर की सड़कों पर बढ़ रहे अतिक्रमण को शीघ्रता से हटाया और रोका जावे। अतिक्रमण की प्रवृत्ति बुरी और अवैध है। अतः इसे सख्ती से रोका जाना आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि आप इस दिशा में अतिशीघ्र उचित कार्यवाही कर जनता को सुविधा प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद!

प्रार्थी/निवेदक,

अविनाश

दिनांक : 24 मार्च, 2018 नीम का दरवाजा, जयपुर।

खण्ड–स

9. क्रिया एवं विशेषण को परिभाषित कीजिए। 2

उत्तर :

क्रिया की परिभाषा – जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे– पढ़ना, खेलना आदि।

विशेषण की परिभाषा – संज्ञा की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे– काला अंगूर, खट्टे फल आदि।

10. भूतकाल की परिभाषा देते हुए भूतकाल के भेदों को सोदाहरण लिखिए। 3

उत्तर :

भूतकाल– क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं।

भूतकाल के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं–

1. **सामान्य भूत –** इसमें क्रिया के हो चुकने का ज्ञान होता है। इसमें यह ज्ञात नहीं होता कि क्रिया को हो चुके कितना समय बीत चुका

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

है। जैसे– हमने गाड़ी पकड़ ली।

2. **आसन्न भूत–** क्रिया के जिस रूप से उसके अभी–अभी पूरा होने का पता चले। जैसे– पिताजी दफ्तर चले गए।
3. **पूर्ण भूत–** क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल समाप्त हो जाने का बोध हो। जैसे– नेहा कक्षा में अव्वल आई।
4. **अपूर्ण भूत–** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में उसके समाप्त होने का पता न चले। जैसे– प्रदर्शनी चल रही थी।
5. **संदिग्ध भूत–** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में उसके होने में संदेह हो। जैसे– माताजी पहुँच गई होगी।
6. **हेतु–हेतुमद् भूत–** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल की किसी एक क्रिया का होना या न होना किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर हो। जैसे– यदि समय पर डाक्टर आ जाता तो मरीज बच जाता।

11. निम्न सामासिक पदों का विग्रह कीजिए– 2

यथाशक्ति, रातोंरात, त्रिलोक, मंत्रिपरिषद्।

उत्तर :

यथाशक्ति– शक्ति के अनुसार।
रातोंरात– रात ही रात में।
त्रिलोक– तीन लोकों का समाहार।
मंत्रिपरिषद्– मंत्रियों की परिषद्।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। 1×2=2

1. लोकसभा की चुनाव इस वर्ष होगा।
2. वह छत पर से गिर पड़ा।

उत्तर :

1. लोकसभा का चुनाव इस वर्ष होगा।
2. वह छत से गिर पड़ा।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। 1×2=2

1. आगा–पीछा करना।
2. कूच करना।

उत्तर :

1. **आगा–पीछा करना** (इधर–उधर होना) – प्रधानाचार्य के मैदान में आते ही बच्चे आगा–पीछा करने लगे।
2. **कूच करना** (आगे बढ़ना) – सेनाओं ने सीमा की ओर कूच किया।

14. **दाल–भात में मूसलचन्द** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

उत्तर :

किन्हीं दो के बीच में बाधक तीसरा व्यक्ति।

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

लखन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहू देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

मातु पितहि जनि सोचबस, करसि महीसकिसोर।

गर्भन्ह के अर्भक दलन, परसु मोर अति घोर।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित **रामचरितमानस** के बालकाण्ड से उद्धत **लक्ष्मण–परशुराम संवाद** का अंश है। इसमें धनुष–भंग के बाद लक्ष्मण और परशुराम के आवेशयुक्त संवादों का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

व्याख्या– लक्ष्मण हँसकर परशुराम से बोले–हे देव! मेरी समझ से सभी धनुष एक समान हैं। शिवजी के पुराने धनुष को तोड़ देने से क्या लाभ व क्या हानि? श्रीराम ने इसे नये के धोखे से देखा ही था, लेकिन यह तो छूते ही टूट गया, फिर इसमें श्रीराम का क्या दोष है? इसलिए हे मुनि! आप अकारण ही क्यों क्रोध कर रहे हैं? तब अपने फरसे की तरफ देखकर परशुराम बोले–अरे शठ! तुमने मेरे स्वभाव को अभी तक नहीं सुना है। मैं बालक समझकर तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। हे जड़! क्या तू मुझे निरा मुनि ही समझ रहा है? मैं बाल–ब्रह्मचारी और अत्यधिक क्रोधी हूँ और सारे संसार को पता है कि मैं क्षत्रियों के कुल का घोर शत्रु हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल पर ही इस पृथ्वी को अनेक बार भूप–विहीन (क्षत्रिय राजाओं से रहित) किया है और अनेक बार उनके राज्यों की भूमि को जीतकर ब्राह्मणों को दान कर चुका हूँ। हे राजपुत्र! मेरे फरसे की ओर देखो, यह सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला है।

हे राजपुत्र! माता–पिता को अपनी मूर्खता से शोकग्रस्त मत करो। क्षत्राणियों के गर्भों में स्थित शिशुओं का मर्दन करने वाला मेरा यह फरसा अत्यंत भयंकर अर्थात् विनाशकारी है।

विशेष–

1. परशुराम के क्रोधी स्वभाव की व्यंजना हुई है। परशुराम ने पहले क्षत्रियों का अनेक बार वध किया था, उसी ओर संकेत किया गया हैं।
2. अनुप्रास, आक्षेप एवं काव्यलिंग अलंकार हैं। अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है। चौपाई–दोहा छन्द की गति–यति उचित हैं।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहूँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु।।

रे नृप बालक काल बस, बोलत तोहि न सँभार।

धनुही सम तिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित **रामचरितमानस** के बालकाण्ड से **लक्ष्मण–परशुराम संवाद** से लिया गया है। परशुराम

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

को शिव–धनुष के भंग से क्रोधित देखकर पहले राम तथा फिर लक्ष्मण ने जो कुछ भी कहा और परशुराम ने जो प्रतिरोध प्रकट किया, इसमें उसका वर्णन किया गया है।

व्याख्या– श्रीराम ने परशुराम से कहा कि हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका एक सेवक ही होगा। आपकी क्या आज्ञा है, आप मुझे क्यों नहीं कहते? यह सुनकर क्रोधित मुनि परशुराम नाराज होकर बोले– सेवक वही होता है जो सेवा करे, शत्रुता का कार्य करके जो युद्ध करे, वह सेवक नहीं होता है। हे राम! सुनो, जिसने शिव–धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु की तरह मेरा शत्रु है। इसलिए वह यहाँ उपस्थित राजाओं के समूह से स्वयं अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जायेंगे। मुनि परशुराम के कथन को सुनकर लक्ष्मण मुस्कराए और परशुराम का अपमान करते हुए बोले–हे स्वामी! बचपन में हमने न जाने कितने छोटे धनुष तोड़ डाले, किन्तु कभी आपने ऐसा क्रोध नहीं किया। इस धनुष पर आपकी किस कारण इतनी ममता है? लक्ष्मण के ऐसे वचन सुनकर भृगुवंश की ध्वजा अर्थात् भृगुवंश के श्रेष्ठ पुरूष परशुराम क्रोध करके कहने लगे–

हे राजपुत्र! कालवश होने के कारण बोलने में तुम्हें समझ नहीं है। इस कारण तुम क्या कह रहे हो, यह नहीं जान रहे हो। यह संसार भर को ज्ञात है कि यह शिव–धनुष कोई सामान्य छोटे धनुष के समान नहीं है।

विशेष–

1. संवाद में श्रीराम को विनयी तथा लक्ष्मण को आवेशी स्वभाव का बताया गया है।
2. मुनि परशुराम के लिए जो विशेषण दिये गये हैं, वे उचित भावव्यंजक हैं।
3. चौपाई–दोहा छन्द की गति–यति उचित है। अवधी भाषा और अनुप्रास, उपमा एवं आक्षेप अलंकार का प्रयोग हुआ है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

आज रात्रि को पर्यंक पर जाते ही अचानक आँख लग गई। सोते में सोचता क्या हूँ कि इस चलायमान शरीर का कुछ ठिकाना नहीं। इस संसार में नाम स्थिर रखने की कोई युक्ति निकल आवे तो अच्छा है, क्योंकि यहाँ की रीति देख मुझे पूरा विश्वास होता है कि इस चपल जीवन का क्षण–भर का भरोसा नहीं। ऐसा कहा भी है–

स्वाँस स्वाँस पर हरि भजो वृथा स्वाँस मत खोय।

न जाने या स्वाँस को आवन होय न होय।।

देखो समय सागर में एक दिन सब संसार अवश्य मग्न हो जायेगा। कालवश शशि सूर्य भी नष्ट हो जायेंगे। आकाश में तारे भी कुछ काल पीछे दृष्टि न आवेंगे। केवल कीर्ति–कमल संसार–सरोवर में रहे या न रहे, और सब तो एक तप्त तवे की बूँद हुए बैठे हैं।

उत्तर :

सन्दर्भ और प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक के **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

लेखक ने एक रात एक विचित्र सपना देखा कि कोई काम करना चाहिए क्योंकि संसार में सब नश्वर है और जीवन भी स्थायी नहीं है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि एक रात वह जैसे ही पलंग पर आकर लेटा, उसे नींद आ गई। नींद की दशा में ही उसने सोचा कि संसार में जीवन स्थायी नहीं है। वह कभी भी समाप्त हो सकता है। मरने के बाद भी लोग उसे याद रखें, इसका कोई उपाय पता चल जाये तो अच्छा है। संसार के तौर–तरीके देखकर लेखक को विश्वास हो गया है कि जीवन अस्थिर है। उसके स्थायित्व का एक पल भी विश्वास नहीं किया जा सकता। किसी कवि का यह कथन सच ही है कि हर बार श्वांस लेते समय ईश्वर को याद करना चाहिए। एक भी श्वांस बेकार नहीं जाने देनी चाहिए। यह नहीं पता कि एक श्वांस आने के पश्चात् दूसरी श्वांस आयेगी भी या नहीं। समय समुद्र के समान है। एक दिन समयरूपी समुद्र में संसार डूबकर समाप्त हो जायेगा। समय आने पर चन्द्रमा और सूर्य भी मिट जायेंगे। कुछ समय बाद आकाश में तारे भी स्पष्ट दिखाई नहीं देंगे। मनुष्य के यश का कमल–पुष्प भी शेष रहेगा या नहीं, यह भी पता नहीं है। जिस प्रकार गरम तवे पर पानी की बूँद गिरते ही नष्ट हो जाती है और क्षणभर में ही भाप बनकर उड़ जाती है, उसी प्रकार संसार में प्रत्येक वस्तु अस्थायी है। एक न एक दिन हर वस्तु नष्ट हो जाती है।

विशेष–

1. भारतेन्दु जी ने संसार की नश्वरता का वर्णन करते हुए बताया है कि मनुष्य चाहता है कि मृत्यु के पश्चात् लोग उसका नाम याद रखें। इसके लिए वह कुछ स्मरणीय काम करना चाहता है।
2. इन पंक्तियों में संसार की रीति–नीति पर प्रखर व्यंग्य किया गया है।
3. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है तथा शैली व्यंग्यात्मक है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

संसार में पाठशालाएँ अनेक हुई होंगी, परन्तु हरि कृपा से जो सकलपूर्ण कामधेनु यह पाठशाला है वैसी, अचरज नहीं कि आपने इस जन्म में न देखी सुनी हो। होनहार बलवान है, नहीं तो कलिकाल में ऐसी पाठशाला का बनाना कठिन था। देखिए, यह हम लोगों के भाग्य का उदय है कि ये महामुनि मुग्धमणि शास्त्री बिना प्रयास हाथ लग गये जिनको सतयुग के आदि में इन्द्र अपनी पाठशाला के निमित्त समुद्र और वन जंगलों में खोजता फिरा, अन्त को हार मान वृहस्पति को रखना पड़ा। हम फिर भी कहते हैं कि हमारे भाग्य की महिमा थी कि ये ही पण्डितराज मृगयाशील श्वान के मुख में शशी के धोखे बद्रिकाश्रम की एक कन्दरा में से पड़ गये। इनकी बुद्धि और विद्या की प्रशंसा करने में सरस्वती भी लजाती है। इसमें संदेह नहीं कि इनके थोड़े ही परिश्रम से पण्डित मूर्ख और अबोध पण्डित हो जायेंगे।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमरी पाठ्यपुस्तक में संकलित **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हिन्दी गद्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

लेखक एक रात को देखे गए विचित्र सपने के बारे में बताते हुए कहता है कि उसने अपना नाम इस संपूर्ण संसार में बनाए रखने के विचार से एक पाठशाला बनवाने का निश्चय किया।

व्याख्या– लेखक ने सपने में एक पाठशाला का निर्माण करवाया। संसार में पाठशालाएँ तो अनेक होंगी किन्तु यह पाठशाला अद्भुत थी। ईश्वर की कृपा से बनी यह पाठशाला कामधेनु के समान समस्त कामनाओं को पूरा करने वाली थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसी पाठशाला पाठकों ने कभी नहीं देखी होगी। जो होना होता है, उसे कोई

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

रोक नहीं सकता अन्यथा कलयुग में ऐसी पाठशाला का बनना आसान नहीं था। इस पाठशाला के लिए महामुनि मुग्धमणि शास्त्री अनायास प्राप्त हो गए। उनको सतयुग में अपनी पाठशाला में रखने के लिए देवराज इन्द्र उनकी तलाश में समुद्र और वनों में भटकते रहे थे। जब वह नहीं मिले तो उन्होंने हारकर बृहस्पति को अपनी पाठशाला में नियुक्त किया था। यह सौभाग्य की बात है कि लेखक को यह महामुनि अनायास ही मिल गए। जिस प्रकार शिकार के लिए निकले कुत्ते के मुँह में कोई खरगोश हो, उसी प्रकार बद्रीनाथ धाम की हिमालय की गुफा में रह रहे यह महापण्डित भाग्यवश ही लेखक को प्राप्त हो गए। वह महान विद्वान हैं। विद्या की देवी सरस्वती के वश में भी उनकी बुद्धि और विद्या की प्रशंसा करना नहीं है। इस बात में संदेह नहीं हो सकता कि इनके प्रयत्न और थोड़े समय के परिश्रम से पण्डित मूर्ख बन जायेंगे और अज्ञानी लोग ज्ञानवान बन जायेंगे।

विशेष–

1. लेखक द्वारा सपने में बनाई गई पाठशाला अपूर्व है। उसमें नियुक्त अध्यापक भी अपूर्व और असाधारण हैं।
2. महामुनि मुग्धमणि शास्त्री पाठशाला में कार्यरत ऐसे ही अद्भुत अध्यापक हैं।
3. भाषा सरल और सुबोध है। शैली व्यंग्यपूर्ण है।

17. कृष्ण ने भोली राधा को बातों में कैसे उलझा लिया? 6

उत्तर :

एक दिन यमुना तट पर कृष्ण ने एक गौर–वर्ण सुन्दरी राधा को देखा। कृष्ण राधा से परिचित नहीं थे। उन्होंने उससे पूछा कि, वह कौन है, कहाँ रहती है, किसकी बेटी है? आज से पूर्व हमने तुम्हें ब्रज की गलियों में नहीं देखा है। राधा ने सहज भाव से कहा– हम ब्रज की ओर आती ही नहीं हैं। हम तो अपनी ड्योढ़ी पर खेला करती हैं। हाँ, हमने यह अवश्व सुना है कि ब्रज में नन्द का बेटा दही और मक्खन की चोरी करता फिरता है। राधा के आरोप का उत्तर देते हुए कृष्ण ने कहा– हम तुम्हारा क्या चुरा लेंगे? आओ, हमारे साथ जोड़ी बनाकर खेलने चलो। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने भोली राधा को अपनी मीठी बातों से फुसला लिया। वह कृष्ण के साथ खेलने को तैयार हो गई।

अथवा

17. **संदेसनि मधुबन कूप भरे** पद में गोपियों की विवशता किस प्रकार प्रकट होती है? 6

उत्तर :

गोपियाँ श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती थी। श्रीकृष्ण उनके मन को चुराकर मथुरा चले गए। विरह–व्यथित गोपियों ने अपने प्रिय कृष्ण को अनेक संदेश भेजे। लेकिन उनमें से एक का भी उत्तर उन्हें नहीं मिला। विरहिणी गोपियों के रोने से, नेत्र जल से कागज भी भीग गए, स्याही उनकी विरहाग्नि से सूख गई और सरकंडे उनके विरह ताप की अग्नि से जल गए। कागज, स्याही और कलम के अभाव में वे अपने प्रिय को पत्र कैसे लिखतीं? साथ ही निरन्तर रोते रहने से उनके नेत्रों की पलकें इतनी सूज गईं; जैसे नेत्रों पर किवाड़ से लग गए हों। यह स्थिति गोपियों की विवशता को व्यंजित करती है।

18. भारतेन्दुजी की शैली पर प्रकाश डालिये। 6

उत्तर :

भारतेन्दुजी से पूर्व हिन्दी गद्य–रचना में दो प्रधान शैलियाँ प्रचलित थी– एक, तत्सम–प्रधान विशुद्ध हिन्दी की शैली तथा दूसरी, उर्दू के तत्सम शब्दों से भरी उर्दू वाक्य–रचना वाली शैली। भारतेन्दुजी ने इन दोनों ही शैलियों का मध्यम रूप अपनाया। इसलिए उन्होंने हिन्दी गद्य–रचना में खड़ी बोली के शब्दों के साथ तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग किया तथा अरबी–फारसी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया। इस प्रकार उन्होंने अपनी भाषा को बोलचाल के व्यावहारिक शब्दों से सँवारा और उसे लोकप्रिय रूप दिया। भारतेन्दुजी ने तत्सम शब्दों के साथ ब्रजभाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया। इस तरह मिश्रित भाषा का प्रयोग कर उन्होंने हिन्दी की गद्य–शैली का विकास किया। भाषा में प्रवाह उत्पन्न करने की दृष्टि से उन्होंने लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग किया तथा विषयानुकूल शब्दावली का पूरा ध्यान रखा। इसलिए भारतेन्दुजी की भाषा वास्तविक अर्थों में जनभाषा के रूप में उभरी और उससे हिन्दी भाषा के भावी स्वरूप के विकास को आधारशिला प्राप्त हुई।

गद्य–शैली की दृष्टि से भारतेन्दुजी ने (1) विचारात्मक, (2) भावात्मक, (3) आवेगात्मक, (4) व्यंग्यात्मक एवं (5) वर्णनात्मक शैली को प्रमुखता से अपनाया। **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** निबन्ध में उन्होंने आवेगात्मक व व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया।

अथवा

18. **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** निबन्ध में मुख्यतः किस पर व्यंग्य किया गया है? 6

उत्तर :

एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न काल्पनिक व्यंग्यात्मक निबन्ध है। इस निबन्ध में भारतेन्दुजी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त धर्मान्धता, स्वार्थपरता पाखण्ड एवं दिखावे की प्रवृत्ति आदि पर व्यंग्य किया है, परन्तु इसमें मुख्य रूप से तत्कालीन अंग्रेज–शासकों की शिक्षा–व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। इस निबन्ध के द्वारा यह भी संकेत किया गया है कि उस समय अंग्रेज सरकार शिक्षा के स्तर को लेकर नये–नये प्रयोग कर रही थी। इसीलिए भारतेन्दुजी ने तत्कालीन शिक्षा–पद्धति पर तीखा व्यंग्य करते हुए भारतीय समाज की दुर्दशा और अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीति पर गहरा आक्षेप किया है। वे इस तथ्य से पूर्ण रूप से परिचित थे कि यह शिक्षा–पद्धति अंग्रेजों के हितों को साधने के लिए अपनाई गई है, जो मात्र सस्ते क्लर्क एवं सफेदपोश बाबू पैदा कर रही है। भारतेन्दुजी अंग्रेजों की इस नीति के दुष्परिणामों से परिचित थे, इसीलिए उन्होंने एक अपूर्व पाठशाला खोलने का सपना देखा था, जिसमें सबकुछ उलटा–पुलटा था। अपनी इसी उलट–पुलट कल्पना के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन शिक्षा–क्षेत्र में व्याप्त अराजकता की ओर संकेत करते हुए पाठशाला में सब कुछ हास्यास्पद रखकर तत्कालीन शिक्षा–पद्धति की खिल्ली उड़ायी है।

19. कृष्ण ने एक झलक में ही गोपियों का मन कैसे वश में कर लिया? 2

उत्तर :

नवल किशोर श्रीकृष्ण की रूप छवि अत्यन्त सुन्दर थी। उनका व्यक्तित्व मधुर, मादक और आकर्षक था। उन्होंने अपने तिरछे चितवन से गोपियों का मन अपने वश में कर लिया। गोपियों ने कृष्ण के हृदय

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

को अपने समस्त प्रेम और प्रीति के बल से जकड़ कर रखना चाहा, किन्तु वे अपनी मुस्कान का उपहार देकर सभी बन्धनों को तोड़कर मथुरा जाने में सफल हो गए।

20. नायिका के भाग क्यों सो गये? 2

उत्तर :
नायिका वर्षा ऋतु के सुहावने वातावरण में प्रियतम कृष्ण के दर्शन करती है। प्रियतम ने उस नायिका से कहा–आओ, आज झूला झूलें। नायिका प्रसन्नता में पागल बनी झूला झूलने के लिए उठना ही चाहती थी कि अचानक उसकी आँखें खुल गई। उस जागने में नायिका के जागे हुए भाग फिर से सो गए, क्योंकि जागने पर वहाँ न आकाश में बादल थे और न घनश्याम कृष्ण ही।

21. कविता **अभी न होगा मेरा अन्त** के अनुसार वसंत आगमन पर प्रकृति में कौन–से परिवर्तन परिलक्षित होते हैं? 2

उत्तर :
वसंत आगमन पर प्रकृति में अनेक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। सब ओर हरियाली छा जाती है। वृक्ष, लता, पादप और वनस्पति सब में नव–यौवन जाग जाता है। उनके शरीर कोमल हो जाते हैं। डालियों में अद्‌भुत चमक आ जाती है। पत्ते हरे–भरे हो जाते हैं। लताओं, वृक्षों पर नवीन कलियाँ नजर आने लगती हैं। जल–तरंगों पर सूर्य की स्वर्णिम किरणें क्रीड़ा करने लगती हैं। सब ओर नूतन विकास दृष्टिगत होने लगता है, सब ओर जीवन ही जीवन दिखाई देता है। वसंत आगमन पर प्रकृति सर्वांग रूप से नूतन परिधान पहन लेती है।

22. लेखक ने देवालय बनाने का विचार क्यों त्याग दिया? 2

उत्तर :
देवालय बनाने का विचार आने पर लेखक ने सोचा कि इन दिनों पाश्चात्य सभ्यता तथा अंग्रेजी शिक्षा का जो प्रसार हो रहा है, यदि भविष्य में भी यही स्थिति रही, तो मन्दिर में दर्शन हेतु कोई नहीं आयेगा, कोई उस ओर देखेगा भी नहीं। अंग्रेजी शिक्षा–सभ्यता के प्रसार से देवालयों की घोर उपेक्षा होगी और पुण्य–लाभ भी कम ही हो पायेगा। इस विचार से लेखक को देवालय बनाने के विचार का त्याग करना पड़ा।

23. सागरमल गोपा को जेल में दी गई यातनाओं का वर्णन कीजिए। 2

उत्तर :
सागरमल गोपा को जेल में हाथ पीछे करके हथकड़ी लगाई गई और पैरों में बेड़ियाँ डाली गईं। बेड़ियों के कारण पैरों में घाव पड़ गये थे। बार–बार बेंतों की मार खाने से कपड़े जगह–जगह से फट गये थे और उन पर खून के धब्बे लगे हुए थे। पुलिस अधीक्षक ने अपने सिपाहियों से सागरमल पर लाठी, घूँसों एवं लातों से प्रहार करने का आदेश दिया था। उसके कानों, नाक, आँखों और निचले अंगों में मिर्चें भर दी थीं। अन्त में खूब मारकर उसे बेहोश कर दिया था और तेल उड़ेल कर उसे जीवित ही जला दिया था। इस प्रकार उसे अनेक यातनाएँ दी गईं।

24. सन्त दादूदयाल के स्मारकों में सर्वप्रथम स्थान किसका माना जाता है? 2

उत्तर :
करडाला या कल्याणपुर को सन्त दादूदयाल के स्मारकों में सर्वप्रथम स्थान माना जाता है। वहाँ पर दादू ने पहली बार बहुत समय तक साधना की थी। इस बात का परिचय दिलाने के लिए वहाँ पर उनकी एक भजन शिला आज भी स्थित है। वहाँ पर पहाड़ी के नीचे की ओर एक सुन्दर **दादू द्वारा** भी बनाया गया है, जिसे दादूजी की साधना–स्थली के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

25. श्याम ने किसको सिखाकर वश में कर लिया? 1

उत्तर :
श्याम ने गोपियों का प्रेम संदेश लेकर आने वाले पथिकों को सिखाकर अपने वश में कर लिया।

26. राधा–श्रीकृष्ण पर किसकी चोरी का आरोप लगा रही थी? 1

उत्तर :
राधा–श्रीकृष्ण पर दही–मक्खन की चोरी का आरोप लगा रही थी।

27. ज्योतिष विद्या में कुशल पण्डित का क्या नाम था? 1

उत्तर :
ज्योतिष विद्या में कुशल पण्डित लुप्तलोचन ज्योतिषाभरण था।

28. राजू किसके पत्र को पढ़ रहा था? 1

उत्तर :
राजू वेलू गाँधी के पत्र को पढ़ रहा था।

29. महाकवि सूरदास का परिचय संक्षेप में लिखिए। 4

उत्तर :
भक्तिकाल के मुख्य कृष्णभक्त एवं सगुण उपासना वाले सन्त कवि सूरदास का जन्म वि. संवत् 1540 में हुआ था। इनका जन्म–स्थान आगरा व मथुरा के बीच स्थित **रुनकता** ग्राम माना जाता है। कुछ विद्वान् दिल्ली के निकट **सीही** ग्राम को इनकी जन्मस्थली मानते हैं। ये जन्मान्ध थे, परन्तु इस सम्बन्ध में भी कुछ मतभेद हैं। ये विरक्त होकर मथुरा के पास गऊघाट पर निवास करते थे और विनय के पद गाते थे। वहीं पर महाप्रभु वल्लभाचार्य ने इन्हें दीक्षा दी। वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने पर इन्होंने सख्य भाव की भक्ति आरंभ की। उसके बाद इन्हें अष्टछाप के भक्त कवियों में प्रमुख स्थान दिया गया। अपने गुरु वल्लभाचार्य के निर्देश पर इन्होंने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की लीलाओं की विविध राग–रागनियों के आधार पर विभिन्न पदों की रचना की।

महाकवि सूरदास ने श्रीमद्‌भागवत की कथाओं को ब्रजभाषा में रचित पदों में गुम्फित करने का प्रयास किया। इस दृष्टि से **सूरसागर** इनका प्रामाणिक एवं अत्यंत उत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–**सूर सारावली** तथा **साहित्य लहरी**।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

30. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। 4

उत्तर :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रवर्तक थे। उन्होंने साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास किया। उन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना आदि सभी नवीन विधाओं में महत्त्वपूर्ण लेखन किया तथा खड़ी बोली गद्य की परम्परा का सूत्रपात कर उसे प्रौढ़ता प्रदान की। भारतेन्दु ने पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा महान् साहित्यकार थे। भारतेन्दु अपने आप में एक साहित्यिक आन्दोलनकारी थे। वे समाज-सुधार एवं जनजागरण के साथ हिन्दी भाषी क्षेत्र में सांस्कृतिक क्रान्ति के सूत्रधार थे। केवल पैंतीस वर्ष की अल्पायु पाकर उन्होंने जो साहित्यिक योगदान किया, उसी से वे **भारतेन्दु** सम्मान के पात्र बने।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों की विस्तृत संख्या है। उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम हैं- सुलोचना, परिहासवंचक, लीलावती, दिल्ली दरबार दर्पण, मदालसा निबन्ध-संग्रह; पदालसोपाख्यान, हमीर हठ, सावित्री चरित्र, कुछ आपबीती कुछ जगबीती, कथासाहित्य; सरयूपार की यात्रा, लखनऊ यात्रा यात्रा-वृत्तान्त; सत्य हरिश्चन्द्र, नीलदेवी, भारतदुर्दशा, अन्धेर नगरी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, श्रीचन्द्रावली मौलिक नाटक। उनके काव्य-संग्रह तथा अनुदित नाटकों की संख्या काफी है। संक्षेप में कह सकते हैं कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का व्यक्तित्व-कृतित्व क्रान्तिकारी साहित्यकार के रूप में अत्यंत स्मरणीय है।

****

सत्र 2020-21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।